14 फरवरी, 2021

पंडित दीनदयाल उपाध्याय की 73वीं पुण्यतिथि के अवसर पर दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या में 'आत्मनिर्भर भारत – सक्षम भारत' विषय पर संबोधन

- सर्वप्रथम, मैं पंडित दीनदयाल उपाध्याय को उनकी 53वीं पुण्यतिथि पर सादर नमन करता हूं। उनका जीवन और उनका कृतित्व हम सबके लिए सदा प्रेरणा का स्त्रोत है।

- पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति की ओर से दीनदयाल जी की 53वीं पुण्यतिथि के अवसर पर आयोजित इस व्याख्यानमाला के अवसर पर मुझे धानक्या की पावन धरती पर आने का मौका मिला, मैं यहां आकर खुद को धन्य महसूस कर रहा हूं।
- साथियो, पंडित जी का जन्म भगवान श्री कृष्ण की धरती मथुरा में हुआ, जहां के कण-कण में धर्म और आस्था समाहित है, परन्तु उनका बचपन राजस्थान की वीर धरा पर बीता।
- इसी कारण पंडित जी के व्यक्तित्व में धर्म के साथ कर्म और वीरता के वे सभी गुण थे जिसने उन्हें राष्ट्र निर्माण को समर्पित एक महामानव बनाया। ऐसे वीर पुरुष को मेरा सादर नमन है।
- मैं स्वयं को खुशकिस्मत मानता हूं कि मैं उस कोटा-बूंदी लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता हूं जहां पंडित दीनदयाल जी ने कुछ समय के लिए शिक्षा ग्रहण की थी। यह उन्हीं के आशीर्वाद का ही प्रताप है कि शिक्षा के क्षेत्र में कोटा का अपना नाम है और यह आज शिक्षा की काशी के रूप में जाना जाता है।
- वे पंडित दीनदयाल उपाध्याय ही थे जिन्होंने वैचारिक धरातल पर मानवमात्र की गरिमा को पुनःस्थापित किया। दीनदयाल जी ने समाज के पीड़ित, शोषित, वंचित, दबे-कुचले वर्ग की पीड़ा को आवाज दी।
- उन्होंने देश की जनता में राष्ट्रवाद की अलख जगाई और स्वयं को जनता से जुड़े विषयों को आगे रखने के लिए समर्पित किया। उनका जीवन व्यक्तिगत शुचिता और गरिमा का उदाहरण है और हम सबके लिये अनुकरणीय है।
- पंडित दीनदयाल जी राष्ट्रहित को स्वहित व संकीर्ण राजनीतिक हितों से सदैव ऊपर रखते थे। राजनीतिक जीवन में भी उन्होंने विचार और व्यवहार के उच्च आदर्श स्थापित किए।
- उनका एक सम्पूर्ण जीवन दर्शन था, जो उन्होंने अपनी पुस्तकों और आलेखों के माध्यम से हमसे साझा किया है।
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय विचारों का एक बड़ा खजाना हमारे लिए छोड़ गए हैं। उनके विचार ज्ञान के विशाल महासागर हैं जिनको पढ़ के हम उनके व्यक्तित्व के विभिन्न रूपों से परिचित हो सकते हैं अपने आप को गढ़ सकते हैं। उनके विचार मानवतावाद के विचार हैं जो शाश्वत हैं, सनातन हैं। उनके विचार उनके समय में भी प्रासंगिक थे और आज भी प्रासंगिक हैं।

- उनका एकात्म मानववाद का विचार मानवमात्र के लिए था। इसलिए मानव की सेवा का विषय जहां भी आएगा, जब भी आएगा, उनके विचार प्रासंगिक रहेंगे। उन्होंने व्यष्टि से समष्टि की बात कही थी, स्वार्थ से परमार्थ की बात कही थी और मैं नहीं तुम की बात कही थी।

- यदि हम इन तीन शब्दों पर विचार करें तो पाएंगे कि इन्हीं विचारों के माध्यम से समाज का, राष्ट्र का और हर एक व्यक्ति का कल्याण संभव है। समाज का विकास तभी हो सकता है जब समाज का प्रत्येक सदस्य सुखी हो, समृद्ध हो और संतुष्ट हो।

- उनका व्यक्तित्व इतना विराट था कि हम जब भी उनके बारे में पढ़ते हैं, इस तरह के व्याख्यानों में उनके बारे में विद्वानों से सुनते हैं तो हर बार हमारा परिचय उनके जीवन के नए अध्याय से होता है। हर बार उनके विषय मे कुछ नया पता चलता है।

- उनका विजन एक ऐसे देश का निर्माण था जो अपनी आवश्यकताएं अपने संसाधनों से पूरी करे तथा जिसमें समाज के आखिरी व्यक्ति को भी वही सुरक्षा और संरक्षण मिले, जो एक सक्षम व्यक्ति को प्राप्त है।

- हमें उनके इस विज़न को साकार करने के लिए कार्य करना है। वे सामाजिक असमानता और सामाजिक असंतुलन के प्रबल विरोधी थे तथा इसे देश के लिये अभिशाप मानते थे।

- इसलिये आज के व्याख्यान का विषय ''आत्मनिर्भर भारत - सक्षम भारत'' अत्यंत प्रासंगिक और समसामयिक है। यही वो आदर्श है जिसकी प्राप्ति के लिये सरकार कार्य कर रही है।

- हमारा देश आज जिस तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर आगे बढ़ रहा है, उतनी ही तेजी से सक्षम बनने की ओर भी अग्रसर है। यदि हम गहराई से विचार करें तो पायेंगे कि आत्मनिर्भरता और सक्षमता एक ही विषय के दो पक्ष हैं। हम आत्मनिर्भर तभी हो सकते हैं जब हम सक्षम हों।

- साथियो, पिछले एक वर्ष में दुनिया ने एक बड़ी त्रासदी देखी। कोरोना वैश्विक महामारी ने पूरी दुनिया को स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से तो एक बड़ी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में पहुंचाया ही, सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण से भी कठिन हालात का हमें सामना करना पड़ा।

- परन्तु पंडित जी के विचारों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए हमने इस आपदा में से अवसर का मार्ग निकाला और आत्मनिर्भरता की दिशा में विश्वास से आगे बढे।

- इसी भावना से हमने कोरोना की चुनौती का मुक़ाबला करते हुए पहले PPE किट, वेंटीलेटर इत्यादि उपकरणों के निर्माण में आत्मनिर्भरता हासिल की और फिर अन्य देशों को भी इनकी आपूर्ति की।

- आज इसी भावना से हम अपनी वैक्सीन उत्पादन क्षमता का उपयोग मात्र अपने लिए नहीं कर रहे हैं बल्कि विश्व के लगभग सभी देशों को इनकी आपूर्ति भी कर रहे हैं।

- आज हमारा देश एक वैक्सीन महाशक्ति है और अपनी क्षमता का उपयोग हम मानवता के लिए निःस्वार्थ भाव से कर रहे हैं। यह हमारी सक्षमता का उदाहरण है।
- आत्मनिर्भरता को व्यापक अर्थ देते हुए MSME क्षेत्र, जो रोजगार के सबसे बड़े स्रोतों में से एक है, को आगे बढ़ाने के लिये बहुत से निर्णय लिये गये हैं, जिनसे अर्थव्यवस्था को लाभ मिलेगा और आत्मनिर्भरता के लक्ष्य की प्राप्ति होगी।
- आज देश का MSME उद्योग एक बार फिर पूरी ऊर्जा के साथ देश की प्रगति में योगदान देने के लिए तीव्र गति से कार्य कर रहा है।
- इनफॉर्मल सेक्टर में छोटे छोटे उद्यमियों को प्रोत्साहन देने के लिए देश के फुटकर व्यापारियों के लिए स्वनिधि ऋण की व्यवस्था की गई ताकि हमारे सब्जी वाले, हमारे खोमचे वाले, फल वाले और ऐसे ही अन्य विक्रेता एक बार फिर अपने कारोबार को पटरी पर ला सकें।
- देश में लाखों लोगों ने यह ऋण लिया और वे अपने पैरों पर फिर खड़े हो चुके हैं, आत्मनिर्भर हो चुके हैं। इन उपायों से छोटे और सीमान्त उद्यमियों को भी प्रतिष्ठा मिल रही है।
- किसानों का इस देश के प्रति योगदान का सम्मान करते हुए उन्हें भी आत्मनिर्भरता के मार्ग पर आगे बढ़ने के सभी अवसर प्रदान किए गए।
- आज देश के लगभग 12 करोड़ कृषक भाई किसान सम्मान निधि के माध्यम से लाभान्वित हो रहे हैं और अब तक उनके खातों में 20 हजार करोड़ से अधिक की धनराशि डाली जा चुकी है।
- हमें ये बात माननी होगी कि देश सक्षम तभी हो सकता है जब हमारे श्रमिक सक्षम हों, किसान भाई सक्षम हों और समाज का सबसे आखिरी व्यक्ति भी सशक्त हो।
- आज हमारा प्रयास है कि हम उन क्षेत्रों की पहचान करें जिस में विदेश पर हमारी अधिक निर्भरता है और फिर उन क्षेत्रों में अधिक ध्यान देकर आत्म निर्भरता प्राप्त करें। हम ऐसा करके वैश्विक सप्लाई चेन से अलग नहीं हो रहे बल्कि स्वयं को एक मजबूत विकल्प के रूप में विकसित कर रहे हैं।
- माननीय प्रधानमंत्री जी का 'वोकल फॉर लोकल' अभियान के माध्यम से स्थानीय स्तर पर बनाए गए उत्पादों की व्यावसायिक सफलता का मंत्र बन चुका है। उत्कृष्ट गुणवत्ता वाले उत्पाद जो देश और विदेश की आवश्यकताएं पूरी करें, यही एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण का आधार है।
- आपको याद होगा जब कोरोना का समय चल रहा था, तब सरकार ने एक के बाद एक कई पैकेज दिए जिसका उद्देश्य स्वयं को आत्मनिर्भर बनाना था।
- उसके बाद इस वर्ष का बजट भी कहीं न कहीं उसी उद्देश्य के इर्द-गिर्द बुना गया, जिसने देश में कैपिटल इंफ्रास्ट्रक्चर को प्रोत्साहित करने पर बल दिया है।

- आज भारत न सिर्फ ग्लोबल सप्लाई चेन को मजबूत करने की क्षमता रखता है बल्कि गुणवत्ता को सुधारते हुए वैश्विक स्तर पर स्वदेश निर्मित उत्पादों के लिए विश्वास भी पैदा कर रहा है। मुझे विश्वास है कि निकट भविष्य में हमारे उत्पाद वैश्विक स्तर पर लोकप्रियता हासिल करेंगे।

- साथियो, यह तो कुछ उदाहरण मात्र हैं। ऐसी कई उपलब्धियां हैं, जो देश ने पिछले एक वर्ष में हासिल की है। यह आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ने की जो इच्छाशक्ति है, वह दिखाती है कि आज का भारत जागृत और समर्थ भारत है। यह एक ऐसा देश है, जो हर चुनौती के बाद और मजबूत होकर उभरता है।

- बहुत जल्द देश की आजादी के 75 वर्ष पूरे होने जा रहे हैं। जब हम देश की आजादी की 75वीं वर्षगांठ का उत्सव मनाएंगे तो उसका केंद्र हम भारतीयों की ओर से तैयार किए गए स्वयं का संसद भवन होगा। लोकतंत्र का नया मंदिर हमारा नया संसद भवन आत्मनिर्भर भारत की एक जीवन्त तस्वीर एवं समस्त भारतीयों के लिए प्रेरणा का स्रोत होगा।

- मुझे विश्वास है कि इस नए दशक में हम सफलता के नए शिखर को प्राप्त करेंगे। भारत जितनी जल्दी आत्मनिर्भर होगा, उतनी ही जल्दी सक्षम भी होगा और इस परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सबसे आवश्यक है, हम सभी का सकारात्मक योगदान। आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए हमें स्वयं को उस महान लक्ष्य के प्रति समर्पित करना होगा।

- हमें अपने प्रत्येक कर्म को देश की प्रगति, उन्नति और आत्मनिर्भरता के प्रति लक्षित करना होगा। हमें हमारी युवा पीढ़ी का मार्गदर्शन भी करना होगा, उनकी ऊर्जा को सही एवं रचनात्मक दिशा भी दिखानी होगी।

- हमें आत्मनिर्भर भारत बनाने के लिए सामूहिक संकल्पशक्ति का परिचय देना होगा, एक मजबूत इच्छाशक्ति के साथ आगे बढ़ना होगा, तभी हम एक "आत्मनिर्भर भारत-सक्षम भारत" की संकल्पना को साकार कर सकेंगे।

- निश्चय ही, हम 'आत्मनिर्भर भारत' के विचार को यथार्थ में बदलकर अपने देश को एक 'सक्षम भारत' बना सकेंगे जो दुनिया की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली एक महाशक्ति होगा।

- आज इस महत्वपूर्ण अवसर पर आपने मुझे यहां आमंत्रित किया, इसके लिए मैं आप सभी का बहुत-बहुत आभारी हूं। एक बार पुन: उस महान आत्मा श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी की स्मृति में मैं अपने श्रद्धापुष्प अर्पित करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूँ। जय भारत – जय हिंद।